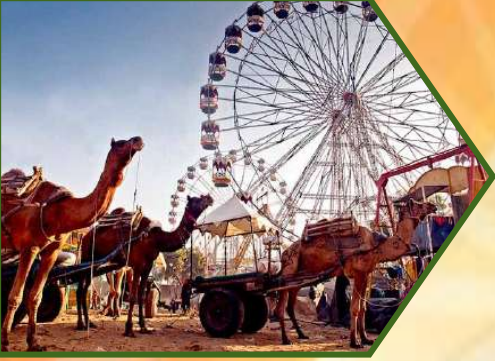




अजयमेरु दर्शन

ई-पत्रिका (अंक-01) वर्ष-2025



भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, दौराई, ब्यावर रोड़, अजमेर-305003 (राजस्थान)



मण्डल कार्यालय, अजमेर
गृह ई-पत्रिका : अजयमेरु दर्शन (अंक-01)

संरक्षक

राकेश कुमार (मण्डल प्रबंधक)

प्रधान संपादक

गोविंद राम गुसाईवाल (प्रबंधक)

संपादक

मनीषा कुमारी (स.श्रे. द्वि.-राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं आदि की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों का है। प्रकाशित रचनाओं के विषय एवं लेख लेखकों के निजी विचार हैं, भारतीय खाद्य निगम का सहमत होना आवश्यक नहीं है।



भारतीय खाद्य निगम



मण्डल कार्यालय, दौराई, ब्यावर रोड़, अजमेर-305003 (राजस्थान)

अनुक्रमणिका

क्र. स.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ स.
1	सदेश		01
2	वार्षिक कार्यक्रम		05
3	भारतीय खाद्य निगम का महत्व	राकेश कुमार	06
4	भारतीय खाद्य निगम खाद्यान्न-आपूर्ति का परिचायक	प्रतीक खंडेलवाल	09
5	बीमारी एव नोकरी	सिद्धार्थ शंकर शर्मा	11
6	अपने कानों के बीच के शोर से दूर रहें	शशिकांत मीणा	12
7	हिन्दी भाषा-राष्ट्र का गौरव	राकेश कुमार	14
8	तुम्हारे लिए एक कविता – माँ	मनीषा कुमारी	16
9	सुकून वो क्या होता है, भूल गए हम	प्रतीक खंडेलवाल	19
10	पल पल बदलते दिन	प्रतीक खंडेलवाल	20
11	जब देखता हूँ देश को	प्रतीक्षित तिवारी	22
12	तपस्वी तूणीर	मनु शर्मा	23
13	माँ	कचन जागिड़	24
14	खाद्य सुरक्षा : एक भौतिक सत्य या अलौकिक परमार्थ	मनु शर्मा	25
15	हर वक्त दूसरों को देख जीने वाले	निर्मल गुप्ता	27
16	ये जमी	जितेंद्र कुमार	28
17	किसी को जानने के लिए	जितेंद्र गर्ग	29
18	दर्शन	दिलीप स्वामी	30
19	साइकल पर सवार एक लड़की और एक पूरी बोतल एसिड	प्रतीक खंडेलवाल	32
20	वृद्धावस्था अभिश्राप नहीं	राकेश कुमार	34
21	योग : स्वस्थ जीवन की कुंजी	मनीषा कुमारी	36
22	हिन्दी नकद पुरस्कार-विजेताओं का विवरण		38
23	हिन्दी पखवाड़ा-विजेताओं का विवरण		39
24	कला प्रदर्शनी		40
25	जगमगाते तारे		42
26	संसदीय राजभाषा समिति		45
27	श्रीमान मुख्य प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा अजमेर का दौरा		46
28	विश्व पर्यावरण दिवस		47
29	वार्षिक अंतर सभागीय खेल प्रतियोगिता 2025		48
30	खेल प्रतियोगिता 2025-विजेताओं का विवरण		49
31	अबेडकर जयंती समारोह		50
32	स्वच्छता पखवाड़ा		51
33	श्रीमान उप महाप्रबंधक राजभाषा की अध्यक्षता में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन		52
34	विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक		53
35	हिन्दी कार्यशाला		54
36	हिन्दी पखवाड़ा – शुभारंभ		56
37	हिन्दी पखवाड़ा – आगार		57
38	हिन्दी पखवाड़ा – प्रतियोगिताएं		58
39	हिन्दी पखवाड़ा – समापन		59
40	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस		60
41	अजमेर दर्शन		62



सौरभ कुमार चौरसिया
महाप्रबंधक (क्षेत्र)
भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मंडल कार्यालय अजमेर अपनी वार्षिक ई-पत्रिका "अजयमेरु दर्शन" के प्रवेशांक का प्रकाशन करने जा रहा है।

किसी भी संस्था की सफलता उसकी टीम की सामूहिक सोच, सकारात्मक दृष्टिकोण और निरंतर प्रयासों पर निर्भर करती है। मुझे यह कहते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आपने उत्कृष्टता की ओर अपने कदम बढ़ाते हुए पत्रिका प्रकाशन का निर्णय लिया है।

मुझे उम्मीद है कि इस पत्रिका में संकलित रचनाएँ, रिपोर्ट्स और विचार न केवल प्रेरणादायक होंगे बल्कि हमारी कार्य-संस्कृति को भी मजबूती प्रदान करेगी। यह मंच कर्मचारियों को अपनी रचनात्मकता दिखाने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है और हमें एक-दूसरे को और बेहतर तरीके से जानने का माध्यम बनता है।

मैं इस प्रयास में जुड़े सभी साथियों—लेखकों, संपादकों और आयोजन टीम को हृदय से बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह परंपरा आगे भी जारी रहेगी।

आइए, हम सभी मिलकर अपने संगठन को नए आयामों तक पहुँचाएँ और साथ मिलकर सफलता की नई कहानियाँ रचें।



(सौरभ कुमार चौरसिया)





राकेश कुमार
मण्डल प्रबंधक
भारतीय खाद्य निगम
मण्डल कार्यालय, अजमेर



प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है की भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, अजमेर से राजभाषा ई-पत्रिका "अजयमेरु दर्शन" के प्रथम अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम अपनी कार्यालयीन हिंदी पत्रिका के माध्यम से आप सभी के समक्ष उपस्थित हो रहे हैं। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे संगठन की कार्य-संस्कृति, रचनात्मकता और सामूहिक प्रयासों की जीवंत झलक है।

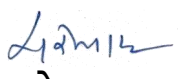
हमारे संस्थान में कार्य करते हुए, हम सभी केवल अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन ही नहीं करते, बल्कि हम एक परिवार की भाँति एक-दूसरे के अनुभव, विचार और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को भी साझा करते हैं। यह पत्रिका उसी पारिवारिक भावना का प्रतीक है।

मुझे अत्यंत हर्ष है कि हमारे बीच ऐसी प्रतिभाएँ हैं जो कार्यक्षेत्र में तो उत्कृष्ट प्रदर्शन करती ही हैं, साथ ही लेखन, कला और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में भी कमाल की सृजनशीलता रखती हैं। इस अंक में उन सभी प्रयासों की एक सुंदर झलक देखने को मिलेगी।

मैं इस सराहनीय पहल के लिए संपादकीय टीम और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ। साथ ही, यह आशा करता हूँ कि आने वाले वर्षों में यह पत्रिका और अधिक समृद्ध, प्रभावशाली और प्रेरणादायक बनेगी।

सदैव एकजुट रहकर कार्य करना और अपनी क्षमताओं को नई ऊँचाइयों तक ले जाना ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। आइए इस भावना को और प्रगाढ़ करें।




(राकेश कुमार)





गोविंद राम गुसाईवाल
प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम

प्रधान संपादक की कलम से



प्रिय पाठकों,

हमें अत्यंत हर्ष है कि आपके हाथों में हमारी यह विशेषांक पत्रिका पहुँच रही है। यह केवल पृष्ठों का संग्रह नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं और रचनात्मक ऊर्जा का एक सुंदर संकलन है। इसमें संजोए गए शब्द-कभी प्रेरणा देंगे, कभी मुस्कान लाएँगे और कभी सोचने पर मजबूर करेंगे।

आज के बदलते समय में जब डिजिटल माध्यम हावी हो चुके हैं, तब भी एक सजीव पत्रिका में जो अपनापन, अनुभूति और आत्मीयता होती है, वह अनुपम है। हमें गर्व है कि यह मंच हमारे कार्मिकों को अपनी प्रतिभा को साझा करने का अवसर देता है।

हम आभारी हैं उन सभी रचनाकारों, संपादकों और सहयोगियों के जिन्होंने इस अंक को विशेष बनाने में अपना योगदान दिया।

आपका साथ, आपकी सराहना और सुझाव ही हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। आइए, हम सब मिलकर साहित्य, संस्कृति और सृजन की इस यात्रा को और भी सुंदर बनाएं।



गोविंद राम गुसाईवाल

(गोविंद राम गुसाईवाल)





मनीषा कुमारी
सहायक श्रेणी-द्वितीय (राजभाषा)
मण्डल कार्यालय, अजमेर

संपादक की कलम से



प्रिय सहयोगियों,

आपके हाथों में यह जो पत्रिका है, वह सिर्फ कागज़ों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारी टीम की मेहनत, भावनाओं और रचनात्मकता का सजीव प्रतिबिंब है। यह हमारे कार्यालय के उस जीवंत पक्ष को सामने लाती है, जो रोज़मर्रा की व्यस्तता के बीच अक्सर अनकहा रह जाता है।

इस अंक के माध्यम से हमने प्रयास किया है कि कर्मचारियों की सोच, अनुभव, रचनात्मक लेखन, कला और भावनाओं को एक साझा मंच मिले। यह पत्रिका केवल एक माध्यम नहीं, बल्कि एक पुल है जो हमें एक-दूसरे से और गहराई से जोड़ता है।

इस संस्करण में आपको जहाँ कार्यस्थल की उपलब्धियाँ देखने को मिलेंगी, वहीं कर्मचारियों की रचनात्मक उड़ान, उनकी सोच और विविध प्रतिभाओं की झलक भी दिखाई देगी। हमें विश्वास है कि इस पत्रिका का प्रत्येक पृष्ठ आपको सोचने, मुस्कराने और प्रेरित होने का अवसर देगा।

मैं संपादकीय टीम की ओर से उन सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने रचनाएँ भेजीं, सहयोग दिया, और इस प्रयास को सफल बनाया।

आप सभी से निवेदन है कि अपने सुझाव, विचार और प्रतिक्रिया हमें अवश्य साझा करें, ताकि हम अगली बार और भी बेहतर अंक ला सकें।

शब्दों की इस यात्रा में हमारे साथ बने रहने के लिए धन्यवाद।



मनीषा कुमारी
(मनीषा कुमारी)





वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 ANNUAL PROGRAMME 2025-26

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्य (Targets for the implementation of Official Language Policy)

1. हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित) (Originating Correspondence in Hindi (including E-mails))					
क क्षेत्र		ख क्षेत्र		ग क्षेत्र	
क क्षेत्र से क क्षेत्र को From A region to A region	100%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को From B region to A region	90%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को From C region to A region	60%
क क्षेत्र से ख क्षेत्र को From A region to B region	100%	ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को From B region to B region	90%	ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को From C region to B region	60%
क क्षेत्र से ग क्षेत्र को From A region to C region	70%	ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को From B region to C region	60%	ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को From C region to C region	60%
क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय /व्यक्ति From Region A to Offices individuals in States/UTs of A & B region	100%	ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय /व्यक्ति From Region B to Offices /individuals in States/UTs of A & B region	90%	ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ /व्यक्ति / राज्य क्षेत्र के कार्यालय From Region C to Offices /individuals in States/UTs of A & B region	60%
कार्य विवरण			क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में देना / Letters received in Hindi to be answered in Hindi		100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण / Noting in Hindi		80%	55%	35%
4.	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training programme through Hindi Medium)		75%	65%	35%
5.	हिन्दी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती / Recruitment of Hindi Typists, Stenographers		80%	70%	45%
6.	हिन्दी में डिक्टेसन / (अथवा सहायक द्वारा स्वयं) की बोर्ड पर सीधे टंकण / Dictation in Hindi/Direct typing on key-board (Self or by Asstt.)		70%	60%	35%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण भाषा, टंकण, आशुलिपि / (Hindi Training ((Language, Typing, Stenography)		100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना / Preparing of Bilingual training Material		100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर, पुस्तकालय के कृत अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिन्दी ईपुस्तक, सीडीडीवीडी, पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर खर्च की गई राशि सहित हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय / Expenditure for the purchase of Hindi books, including digital items i.e. Hindi e-books, CD/DVD, Pen drive & the amount incurred on Hindi translation from English & regional languages, excluding journals and standard reference books.		50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद/Purchase of all electronic equipment including computers in bilingual form		100%	100%	100%
11.	वेबसाइट/ Website		100% द्विभाषी		
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन/Citizen charter and display of Public interface information Board		100% द्विभाषी		
13.	(1) मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण/(% कार्यालयों का) Inspection of Offices located outside Headquarters (% of Offices)		30% न्यूनतम		
	(2) मुख्यालय / कार्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण/Inspection of sections at Hqrs./Office		30% न्यूनतम		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें/Meetings regarding Official Language -राजभाषा कार्यान्वयन समिति/ Official Language Implementation Committee		वर्ष में 04 बैठकें / 4 Meetings in a Year (प्रति तिमाही एक बैठक/1 Meeting every qtr)		
15.	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद / Translation of Codes, Manuals, Forms, Procedural Literature		100%		



राकेश कुमार
मण्डल प्रबन्धक
मण्डल कार्यालय, अजमेर

भारतीय खाद्य निगम का महत्व

भारतीय खाद्य निगम देश की खाद्य आपूर्ति श्रृंखला की एक मजबूत रीढ़ है। इसकी सुचारू कार्य प्रणाली से न केवल किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) लाभ मिलता है, बल्कि देश के करोड़ों लोगों को एनएफएस एक्ट (NFS Act) के माध्यम से किफायती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध होता है।

भारतीय खाद्य निगम (Food Corporation of India - FCI) भारत सरकार का एक प्रमुख सार्वजनिक उपक्रम है, जिसकी स्थापना 1965 में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) दिलाने के उद्देश्य से की गई थी। देश की खाद्य प्रणाली को स्थिर, सुलभ और न्यायपूर्ण बनाए रखने में FCI की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारतीय खाद्य निगम के तीन निम्न महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं :-

- 1) किसानों के हितों की सुरक्षा के लिए प्रभावी मूल्य समर्थन संचालन।
- 2) सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए पूरे देश में खाद्यान्न का वितरण।
- 3) राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए खाद्यान्नों के परिचालन और बफर स्टॉक का संतोषजनक स्तर बनाए रखना।



1. खाद्य सुरक्षा की रीढ़

FCI देश के प्रत्येक नागरिक को पर्याप्त, पोषक और सुलभ खाद्यान्न उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य करता है। यह विशेषकर गरीब और वंचित वर्गों को उचित मूल्य पर खाद्यान्न उपलब्ध कराकर *राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013* को सफलतापूर्वक लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. किसानों को आर्थिक संरक्षण

FCI किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर देशभर में विभिन्न खरीद केन्द्रों के माध्यम से अनाज खरीदकर उन्हें उनके उत्पाद का उचित मूल्य सुनिश्चित करता है। यह प्रक्रिया बिचौलियों से मुक्ति दिलाकर किसानों की आय बढ़ाने और कृषि को और अधिक लाभकारी बनाने में मदद करती है।



3. आपातकालीन स्थिति में राहत

प्राकृतिक आपदा, सूखा, बाढ़ या युद्ध जैसी परिस्थितियों में FCI का भंडारित अनाज त्वरित राहत कार्यों में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। यह किसी भी खाद्य संकट से निपटने के लिए तैयार रहता है। भारतीय खड़ी निगम देशभर में अपने लगभग 2500 खाद्य संग्रहण आगारों के माध्यम से लगभग 800 एलएमटी (LMT) संग्रहण करता है।

अपनी भंडारण क्षमता के अलावा, एफसीआई ने केंद्रीय भंडारण निगम, राज्य भंडारण निगमों, राज्य एजेंसियों और निजी पार्टियों से लघु अवधि के साथ-साथ निजी उद्यमी गारंटी योजना के तहत गारंटीकृत अवधि के लिए भंडारण क्षमता किराए पर ली है।

एफसीआई द्वारा नए गोदामों का निर्माण मुख्य रूप से निजी उद्यमी गारंटी योजना के तहत निजी भागीदारी के माध्यम से किया जा रहा है। एफसीआई सार्वजनिक निजी भागीदारी के माध्यम से साइलो के रूप में अपनी भंडारण क्षमता को भी बढ़ा रहा है और आधुनिकीकरण कर रहा है।

4. सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) का संचालन

FCI राज्यों को खाद्यान्न की आपूर्ति करता है, जिससे राज्य सरकारें राशन दुकानों के माध्यम से BPL, AAY, और अन्य पात्र श्रेणियों को सब्सिडी वाला अनाज उपलब्ध कराती हैं। यह व्यवस्था सामाजिक न्याय और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार करती है। हमारा समर्पित कार्यबल यह सुनिश्चित करता है कि खाद्यान्न हिमालय की चोटियों से लेकर तटीय तटों तक सबसे दूरस्थ क्षेत्रों तक भी पहुंचे।

5. राष्ट्रीय एकता और संतुलित विकास में योगदान

FCI देश के एक हिस्से से अनाज खरीदकर उसे दूसरे हिस्से में पहुँचाता है, जिससे क्षेत्रीय असंतुलन कम होता है और खाद्यान्न की दरों पर भी नियंत्रण रहता है और सभी क्षेत्रों में खाद्य की उपलब्धता समान रूप से सुनिश्चित होती है।

6. खाद्यान्न का तकनीकी रखरखाव ।

FCI आधुनिक गोदामों और साइलोज़ के माध्यम से खाद्यान्न का वैज्ञानिक भंडारण करता है, जिससे खाद्यान्न की बर्बादी कम होती है और भंडारण की गुणवत्ता बनी रहती है। देशभर में भारतीय खाद्य निगम के स्वयं के लगभग 500 आगार हैं। साथ ही भा.खा.नि. विभिन्न योजना जैसे पीईजी (PEG), पीडब्लूएस (PWS) एवं एसडब्लूसी (SWC) व सीडब्लूसी (CWC) सभी गोदाम किराए पर लेता है।

योग्य और प्रशिक्षित कर्मियों द्वारा संचालित एफसीआई की गुणवत्ता नियंत्रण (क्यूसी) विंग को खाद्यान्न की खरीद और संरक्षण का बड़ा काम सौंपा गया है। खाद्यान्नों की खरीद भारत सरकार की निर्धारित विशिष्टताओं के अनुसार की जाती है और गुणवत्ता की निगरानी के लिए भंडारण के दौरान नियमित रूप से निरीक्षण किया जाता है। स्टॉक के प्रतिनिधि नमूने भौतिक और रासायनिक विश्लेषण के लिए लिए जाते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गुणवत्ता मानक भारत सरकार के निर्धारित विनिर्देशों के मापदंडों को पूरा करता है या नहीं। खाद्यान्न के नमूनों को एनएबीएल मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में भी भेजा जाता है और एफएसएस अधिनियम के तहत पैरामीटर की अनुरूपता के लिए भी परीक्षण किया जाता है।

एफएसएसआई (FSSAI) अधिनियम 2006 के अनुसार गुणवत्ता आश्वासन प्रदान करने वाले खाद्यान्नों की गुणवत्ता की प्रभावी निगरानी के लिए भारतीय खाद्य निगम की परीक्षण प्रयोगशालाएँ देश भर में फैली हुई हैं, जिससे ग्राहकों (उपभोक्ताओं) के संतुष्टि स्तर में सुधार हुआ है।

7. निगम में डिजिटलीकरण

निगम अपने प्रॉक्यूरमेंट, मूवमेंट व स्टोरज हेतु डोस (DOS), फैप (FAP), क्यूएमएस (QMS), आईआरएस (IRS), एचआरएमएस (HRMS) व डीपो दर्पण जैसे आधुनिक सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करता है।

भारतीय खाद्य निगम केवल अनाज की खरीद और वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश की आर्थिक, सामाजिक और खाद्य नीति का एक अभिन्न अंग है। यह संस्था न केवल 'अन्नदाता' को सम्मान दिलाने का कार्य करती है, बल्कि प्रत्येक नागरिक की थाली तक अन्न पहुँचाने का दायित्व भी निभाती है। अतः FCI भारत की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था की **मजबूत कड़ी** और **राष्ट्र की खाद्य संप्रभुता का प्रतीक** है।





प्रतीक खंडेलवाल
सहायक श्रेणी-द्वितीय (लेखा)
मंडल कार्यालय अजमेर

भारतीय खाद्य निगम-खाद्यान्न आपूर्ति का परिचायक

भारतीय खाद्य निगम सार्वजनिक क्षेत्र का एक ऐसा उपक्रम है जो खाद्य आपूर्ति के क्षेत्र में एशिया की एक सबसे बड़ी एवं मजबूत खाद्य आपूर्ति श्रृंखला अधिनियम है। जिसका निर्माण देश में एकीकृत खाद्य संरक्षण एवं देश में संपूर्ण रूप से सुदृढ़ ढंग से अनाज की आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से किया गया है।

चूंकि भारत जैसे विकासशील देश में अनाज का असमान उत्पादन है, एक समय ऐसा था जब अनाज का अव्यवस्थित वितरण के कारण खाद्यान्न आपूर्ति व्यवस्था पूरी तरह से डगमगा गई थी। ऐसे समय में देश में खाद्यान्न की संतुलित आपूर्ति एवं उनकी गुणवत्ता बनाए रखते हुए दरों में सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से भारतीय खाद्य निगम की अवसंरचना भारतीय खाद्य निगम 1964 द्वारा गठन किया गया इसका नियमित संचालन 14 जनवरी 1965 से अनवरत रूप से शुरू हुआ।



भारतीय खाद्य निगम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अनाज (मुख्यतः गेहूं एवं चावल) की खरीद करना और उनका संरक्षण करना है भारतीय खाद्य निगम देश में न तो अनाज की कमी होने देता है ना ही देश में अनाज के भंडारण की समस्या उत्पन्न होने देता है। भारत जैसे विकासशील देश, जहां की जनसंख्या लगभग 150 करोड़ के आसपास पहुंच गई है वहां सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से देश में अनाज की अनवरत एवं अबाध्य संतुलित आपूर्ति सुनिश्चित करता है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में निगम नवीनतम तकनीक से सुसज्जित सायलोज स्टोरेज सुविधाओं को लागू करता है।

जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख जैसे क्षेत्रों में जहां भूस्खलन, पर्वतीय चट्टान का स्खलन एवं बर्फबारी के कारण आए दिन मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं एवं आवागमन में पूर्ण रूप से विराम लग जाता है वहां बर्फबारी के कारण लगभग अर्धवर्ष आवागमन बंद रहता है ऐसे दुर्गम स्थानों पर भी भारतीय खाद्य निगम के कर्मठ कर्मचारियों द्वारा समग्र विपरीत प्राकृतिक परिस्थितियों के बावजूद न केवल पूर्ण रूपेण खाद्यान्न आपूर्ति सुनिश्चित की जाती है अपितु पूरे वर्ष उसकी मानकीकृत गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए खाद्यान्न की भंडारण गृहों में सुरक्षा भी की जाती है। चाहे भारत के पाकिस्तान बॉर्डर पर स्थित कश्मीर में बसे अंतिम ग्रामीण स्तर हो या लद्दाख घाटी में बसे गांव हो जहां आतंकी घटनाओं की आशंका भी बनी रहती है, ऐसे में प्रत्येक स्थान पर जनहित के लिए सदैव तत्पर भारतीय खाद्य निगम एवं उनके कर्मचारी सर्वत्र खाद्यान्न की आपूर्ति अचूक एवं अबाध्य रूप से सुनिश्चित करते हैं।



भारतीय खाद्य निगम की उपयोगिता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि कोरोना जैसी विपरीत परिस्थितियों में जहां पूरे देश-विदेश में समस्त गतिविधियां बिल्कुल थम सी गई थी और खाद्यान्न की आपूर्ति हेतु निर्भर समाज की, बाजार पर निर्भरता जहां एक तरफ विदेश में एक गंभीर समस्या बनकर प्रकट हुई थी, वहीं भारत में भी यह एक बहुत बड़ी समस्या बन सकती थी परंतु ऐसे माहौल में भारतीय खाद्य निगम में अनवरत खाद्यान्न आपूर्ति कर देश में किसी भी स्थान पर खाद्यान्न की समस्या उत्पन्न नहीं होने दी।



आज के संदर्भ में भारतीय खाद्य निगम की सुदृढ़ता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि भारत देश के कुल गेहूं की उपज का लगभग 15 से 20% एवं कुल चावल उपज का 12 से 15% की खरीद केवल भारतीय खाद्य निगम भी करता है। न केवल निगम खरीद करता है बल्कि अतिरिक्त का निर्यात भी करता है।





सिद्धार्थ शंकर शर्मा
सहायक श्रेणी-द्वितीय (आगार)
मंडल कार्यालय अजमेर

बीमारी

गर्मी की छुट्टियों में मीरा अपने बच्चों को साथ लेकर पीहर आ गई। पिताजी की खैर-तबीयत मालूम की तो पता चला ब्लड प्रेशर और डायबिटीज की बीमारी ने जोर पकड़ लिया था। उसकी भाभी को उनके लिए अलग से खाना बनाने, दवाईयां देने में परेशानी होने लगी थी। पिताजी से उसका व्यवहार भी रुखा था।

एक दिन उसने अपनी चाची को अपने भाई से कहते हुए सुना, "इस बीमारी को ठीक करते-करते मैं बीमार हो जाऊंगी। अब मुझसे नहीं होगा यह सब, उन्हें किसी वृद्धाश्रम में डलवा दो।" यह सुनकर मीरा का मन खराब हो गया। वापस जाने के लिये सामान जमाते हुए यह सोच रही थी, "भाभी ने बीमारी किसे बताया, डायबिटीज को या पिताजी को।"

लघु कथा



लघु कथा



नौकरी



एक ऑफिस का दृश्य है। बीस रिक्त जगहों को भरने के लिये कुछ आवेदनकर्ता इंटरव्यू के लिये आये थे, उनमें एकमात्र लड़की सुषमा भी थी। बाकी लड़के यही सोच रहे थे कि एक ही लड़की होने की वजह से इसे तो नौकरी मिल ही जायेगी। स्वयं सुषमा भी इस बारे में आश्वस्त थी, इसलिए भी कि उसकी एकेडमिक क्वालिफिकेशन काफी अच्छी थी। हालांकि मैनेजर के लम्पट व्यवहार के बारे में उसने भी काफी कुछ सुन रखा था, पर उसने सोचा, "वो कौनसा मुझे खा ही जायेगा, एक बार ज्वाइन करने के बाद ठीक नहीं लगा तो नौकरी छोड़ दूंगी।"

इंटरव्यू का रिजल्ट एक घंटे बाद ही डिक्लेयर होना था, परंतु सुषमा इंटरव्यू देकर कमरे से बाहर आई तो रुकी नहीं, सीधी घर की ओर चल दी। रास्ते में वो यही सोच रही थी कि, "नौकरी तो मिल जाती, यदि मैं लड़की नहीं होती!"



शशि कान्त मीना
सहायक श्रेणी-द्वितीय (आगार)
मण्डल कार्यालय, अजमेर

अपने कानों के बीच के शोर से दूर रहें

हमारा समय बहुत कीमती है-किसको क्या पता है कि हमारे पास कितना समय है? हर दिन हम इस जीवन रूपी खूबसूरत उपहार को प्राप्त करते हैं। अपने प्रति हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है की हम हर एक क्षण को जितना हो सके, उतना बढ़िया तरीके से जिएं। जब ऐसा होता है तब मानो जैसे जीवन अपनी पूरी सुंदरता के साथ खिल उठता है। यहां तक की अपने कठिन समय में भी हम अपने जीवन के असली आनंद का अनुभव कर सकते हैं। लेकिन अपने समय का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने के लिए हमें अपने ध्यान को केन्द्रित करना चाहिए, इसे केवल वहीं लगाना चाहिए जो हमारे लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो और हमें संतुष्टि प्रदान करे बाकी सब शोर है।

हर दिन का मेरा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। आज का उद्देश्य है आनंद में रहना। आज का उद्देश्य है दयालुता, संतुष्टि और प्रेम में रहना। और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है की मेरे जीवन में शांति हो। अन्य कई चीजें बीच में आ सकती है – वे सभी व्यावहारिक या आवश्यक चीजें हो सकती है लेकिन उनमें से किसी को भी मुझे पूरी तरह जीवन का आनंद लेने की प्राथमिकता से, दूर नहीं करना चाहिए।



लोग अक्सर अपना ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं। मेरा सुझाव यह है कि हम सबसे स्पष्ट तरीके से तब देखते हैं, जब अपने अंदर से मजबूत होते हैं तथा अंदर और बाहर दोनों को देख रहे होते हैं। हमारी दुनिया में आनंद लेने के लिए अद्भुत अवसर मौजूद होते हैं लेकिन अगर हम केवल जो बाहर हो रहा है, उसी को देखते रहें और हमारे भीतर क्या हो रहा है, उससे संपर्क खो दें तो हम अपना सही नज़रिया खो देते हैं और असंतुलित महसूस करना शुरू करते हैं।

जब मे "हमारे भीतर" कहता हूँ तो मैं उस सबसे गहरे हिस्से की बात करता हु, जो हमारे अंदर है। मैं इसे मन के बजाय, हृदय के रूप में देखता हूँ। कितनी आसानी से हम अपना सारा समय मन की बेचैन दुनिया में खर्च कर देते हैं- विचारों, ख्यालो, आशाओं, अनुमानों, चिंताओं, आलोचनाओं और बाहर की चीजों की कल्पनाओं में और फिर एक दिन हम खुद से पूछते हैं-"क्या बस इतना ही है? क्या मैं बस इतना ही हूँ? क्या मैं इन लगातार आने वाले विचारों का जरिया मात्र हूँ? जबकि मन और विचारों से परे, खुद के महत्व का एहसास और पूर्ण महसूस करने की यह प्यास हमारी संस्कृतियों से हट कर है।

शांति, संतुष्टि और इस जैसी कई अन्य अद्भुत चीजे हमारे लिए उपलब्ध है लेकिन हमें याद सुनिश्चित करने की जरूरत है कि हम उसे सही जगह पर तलाश कर रहे हैं। इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, शोर के बारे में थोड़ा और समझना होगा।



अच्छा क्या यही सबकुछ है? क्या हम सब बस यही है? या फिर हम अपने शरीर के अंदर मन से कहीं अधिक है? सच्चाई यह है कि विचारों से परे, हमारे जीवन और हमारे लिए और भी बहुत कुछ है। असल में, हमारा मन ही हमें अपने आपसे एक गहरा संबंध रखने से दूर करता है। कई लोगों के लिए चुनौती यह है कि वे बाहरी आकर्षण के बीच बड़े हुए हैं लेकिन उन्हें यह कभी नहीं दिखाया गया कि वे अपने अंदर विचारों से परे, अपने आपसे जाकर कैसे जुड़े।



अपने आपसे उस गहरे संबंध के बिना, हम अच्छी तरह से महसूस कर सकते हैं कि हमारा एक हिस्सा गायब है- वह हिस्सा जो शायद सबसे महत्वपूर्ण है; लेकिन हम यह नहीं जानते कि क्या गायब है या इसे कहा खोजना चाहिए। जो गायब है, वह है हमारे हृदय में बसी हमारी आंतरिक शांति के साथ हमारा नाता, जिसका मूल है कि हम कौन हैं। जब हम शांति से जुड़े होते हैं तो हमारे जीवन का अनुभव स्पष्टता से भर जाता है और तब हमें पता चलता है कि हमारे लिए क्या महत्वपूर्ण है। जब हम अपने आपको जानते हुए हर दिन की शुरुआत उस शांत जगह से करते हैं तब हम बाहरी दुनिया में रहते हुए भी उस बात पर ध्यान दे सकते हैं जो हमारे लिए सबसे ज्यादा जरूरी है और हम जिसे अनुभव करना चाहते हैं।

राकेश कुमार
मण्डल प्रबन्धक
मण्डल कार्यालय, अजमेर



हिन्दी भाषा - राष्ट्र का गौरव

हिन्दी भाषा पर है हर भारतीय को मान,
जो देश का करती विश्व मे गौरवगान,
बढ़े निरंतर इसका मान-सम्मान,
हो सभी की इसमें सामूहिक भागीदारी
ऐसा हमारा तन मन धन से प्रयास होना चाहिए॥

न हो अनावश्यक विवाद मातृभाषा पर अब
हिन्दी ने जोड़ा है हम सबको
हिमालय से सुदूर दक्षिण भारत को
बंग और कामरूप को भुज से
हिन्दी है हम सबकी प्यारी भाषा
विश्व को भी इसका ज्ञान होना चाहिए॥

निज भाषा पर हो सबको अभिमान
हो निरंतर नवीन ओर श्रेष्ठ साहित्य का सृजन
न हो और अब उपेक्षा अब हिन्दी की
गूँजे विश्व मे हिन्दी भाषा हमारी
ऐसा अब हिन्दी का गौरव गान होना चाहिए॥



न सिमटे अपनी खूबसूरत और सुदृढ़ मातृभाषा केवल
हिन्दी पखवाड़ो ओर सार्वजनिक आयोजनों तक
बढ़े पत्राचार, स्थापित हो बेहतर संवाद, ज्ञान-विज्ञान और
नवीन लेखन मे नित्य नए सोपान और क्षितिज छूए हम
ऐसा हम सबको भरोसा और विश्वास होना चाहिए॥



हिन्दी देवभाषा संस्कृत से है उपजी
11 स्वर ओर 33 व्यंजनो से संवरी
जिसे भारतीय संविधान ने राजभाषा अंगीकार किया
विश्व मे चौथी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा
न हो हिन्दी का विरोध, विरोधियों का प्रतीकार होना चाहिए॥

हो चाए चर्चा जय शंकर प्रसाद के कामायनी की
या कविता अरुण मय ये मधुमय देश हमारा
या महाकवि निराला, सुमित्रानंद पंत या महा देवी वर्मा
के छायावाद साहित्य की जिनका हिन्दी साहित्य विशेष योगदान किया
ऐसी महान हस्तियों और महान भाषा का हृदय में उचित स्थान होना चाहिए ॥



न भूले महान कबीर, तुलसी, सूरदास ओर रसखान को
दुनिया ने जिनको कहाकवि कह कर विशेष मान दिया
दयानन्द सरस्वती, भारतेन्दु न और महान मुंशी प्रेमचंद को
जिन्होंने हिन्दी साहित्य मे निरंतर नवीन आयाम छूए
इन सबके महान साहित्य का विश्व ज्ञान होना चाहिए॥

हिन्दी है भारत ही राजभाषा जिसका इतिहास समृद्ध है
जो देश की प्रगति और संभावनावों का प्रतीक है
जो सहजता, सरलता से देती है आगे बढ़ने का हौसला
हिन्दी ने है दिलाया भारत को विश्व मे एक विशेष स्थान
ऐसी राजभाषा का खुले दिल से सम्मान होना चाहिए





मनीषा कुमारी

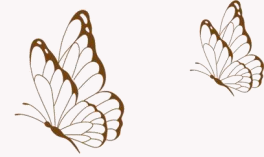
सहायक श्रेणी-द्वितीय (राजभाषा)

मण्डल कार्यालय, अजमेर



तुम्हारे लिए एक कविता-माँ ...

मेरी भोली माँ, प्यारी माँ, जग से निराली माँ ।
है दुनिया की सारी माँ निराली,
लेकिन मेरी है सब से प्यारी माँ ।
कहने को हो गई हूँ मै बड़ी,
लेकिन मुझे हमेशा चाहिए मेरे पास, मेरी माँ ।



दुनियां खाली सी लगती है, जब पास नहीं होती हो तुम माँ ।
मै तुमको बताती नहीं, पर करती हूँ बहुत सारा प्यार माँ ।
हर शाम करती हूँ इंतजार तुम्हारे फोन का माँ ।
करती हूँ कुछ पल बात, पर करना चाहती हूँ ढेर सारी बातें माँ ।

तुम रानी, मै तुम्हारी शहज़ादी माँ ।
चाहती हूँ तुम्हे सारी खुशियाँ देना,
पर तुम हो पहले से मालामाल माँ ।
ऐसा क्या है तुम्हारे हाथों में, जब सहलाती हो सर को माँ,
भूल जाती हूँ सारी परेशानियाँ माँ ।



आंचल तुम्हारा है बहुत बड़ा, मै सो जाती इसे ओढ़ कर माँ ।
महक है तुम्हारी भीनी-भीनी, जिसमें मै खो कर भूल जाती हूँ सबकुछ माँ ।
तुम हस्ती हो तो लगता है, मेरी दुनिया है खुशहाल माँ ।
तुम रोती हो तो लगता है, उजड़ा हुआ सारा संसार माँ ।



लोरी सुनाओ, मेरे सिर को सहलाओ माँ ।
तुम्हारी गोद में सर रख,
आओ तुम्हे सुनाऊं अपने सारे दुख माँ ।
कब तक मुझे अपने गोद में बैठाए रखोगी माँ,
तुम जाने दो तो, तुम्हारे लिए ले आऊं,
आसमान से चांद माँ ।



मेरे घर में घुसते ही, सामने तुम बैठी दिखती हो माँ,
तुम्हें देख लगता है स्वर्ग बस यहीं है माँ।
तुम जब नहीं दिखती, तो लगता है खुल गए नरक के द्वार माँ।
मेरा गुस्सा, मेरी ज़िद, मेरी शैतानियां कैसे सह लेती हो तुम माँ।

तुम सीप हो, मैं तुम्हारा मोती माँ।
मैं अच्छी बेटी नहीं शायद, पर तुम हो सर्वश्रेष्ठ-सर्वोत्तम माँ।
मेरी जिंदगी में सिर्फ एक तुम हो माँ, और तुम में मेरा पूरा जहान माँ।





प्रतीक खंडेलवाल
सहायक श्रेणी-द्वितीय (लेखा)
मंडल कार्यालय अजमेर

सुकून वो क्या होता है, भूल गए हम

आए थे बाहर कमाने को लिए जिस घर से
उसी की याद आई तो, आज आंसू निकल गए
याद किया उन पुराने पलों को, तो समझ आया
सबको खुश करने में खुद के ग़म मिटाना भूल गए



याद करते हैं वो दिन बचपन के
दोस्तों का साथ, टीचरों की मार
सुबह की प्रार्थना और लंच में बंक
अब उन याद को भी भूल गए हम

गुजरते वक्त के साथ भूल गए हम
चाहे वो हो गिल्ली डंडा क्रिकेट
या हो सतोलिया और बाकी खेल
अब सब धीरे-धीरे भूल गए हम



करते थे बचपन में जो अटखेलिया
कभी बनाते थे, पतंगे भी कागज की
कभी बना लेते, खुद ही बॉल कपड़े की
उन धुंधली यादों को भी भूल गए हम



अब करते हैं 10 से 6 की नौकरी
दिनभर की नई नई अड़चनों में
ओर घर गृहस्थी की उलझनों में
अब तो खुद ही जीना भूल गए हम ।



निकले थे जिस सुकून की तलाश में
गुजरते वक्त के साथ, अब समझ आया
जो सुकून था पहले, हमारी जिंदगी में
अब उस सुकून ही को भूल गए हम ।





प्रतीक खंडेलवाल
सहायक श्रेणी-द्वितीय (लेखा)
मंडल कार्यालय अजमेर

पल पल बदलते दिन

एक बहुत ही गरीब परिवार का लड़का था, जो झोपड़ी में रहता था, नाम था राजू। जिसके मां बाप बिल्कुल अनपढ़ थे आज उसने गांव के एकमात्र सरकारी स्कूल में प्रथम श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण कर स्कूल में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था। वाकई में राजू काबिल-ए-तारीफ था। छोटी-छोटी आंखों वाला मासूम सा चेहरा। बोली ऐसी- मानो वाणी मुख से मोती झड़ रहे हों, स्कूल के सभी टीचर और हेड मास्टर जी जिनका वह प्रिय शिष्य था वे सभी आज बड़े ही खुश थे क्योंकि स्कूल खुले हुए कितने वर्ष हो गए थे परंतु यह पहली बार था जब उनके सरकारी स्कूल से किसी विद्यार्थी के 90% से अधिक अंक आए हों और यह कहना भी गलत नहीं होगा कि राजू की दयनीय आर्थिक स्थिति की वजह से उनका राजू से अतिरिक्त लगाव भी था।



परीक्षा परिणाम के घोषित होने के 3 दिन बाद ही प्रतिवर्ष विद्यालय का वार्षिकोत्सव भी रहता था, जिसमें राजू को भी प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया। इन सब खुशियों में अभी एक अजनबी सी मायूसी से अनजान था राजू। पांचवी तक तो उसने पास कर ली थी परंतु छठी कक्षा से आगे पढ़ने के लिए उसके गांव में कोई स्कूल नहीं था जिसका अंदाजा उसे वार्षिकोत्सव समाप्ति के सात आठ दिनों बाद तक हो गया था। राजू के मां-बाप जो दिहाड़ी मजदूरी करते थे, उनके लिए तो दो वक्त की रोटी का इंतजाम भी बड़ी मुश्किल से कर पाते थे वह लोग राजू को गांव से बाहर पढ़ने हेतु भेजने का खर्च उठाने में सक्षम नहीं थे।

पढ़ने की ललक लिए राजू को तो पढ़ना ही था। ऐसे में बाल मन में या तो कुंठा जन्म ले लेती है या कुछ कर दिखाने का जज्बा। राजू में उस जज्बे ने जन्म लिया और उसने स्वयं मजदूरी कर पढ़ाई का खर्च खुद ही उठाने की ठानी और निकल पड़ा वो शहर की ओर। शहर जाकर सरकारी स्कूल में कम फीस में दाखिला दिलाने तो राजू के पिताजी चले गए साथ ही गांव के छगनलाल पंसारी (जो राजू के गांव का ही था) की दुकान पर राजू को नौकरी भी दिला दी।

राजू निकल तो चुका था नई मंजिल की ओर पर एक छोटे से गांव का 10 साल का बच्चा शहर की चकाचौंध में शुरुआती दौर में तो घबरा ही गया, परंतु वह भी जानता था अब जो करना है उसे ही करना है उसकी दिनचर्या में सुबह स्कूल जाना और दिन भर सेठ की दुकान पर नौकरी करना और रात को पढ़ाई करना यही सब बन चुका था। धीरे-धीरे 10-12 दिन निकल गए। 1 दिन सेठ के ग्राहक को सामान देते वक्त राजू से थोड़ा सा नुकसान हो गया उस दिन वैसे ही सेठ का पारा चढ़ा हुआ था, ऐसे में नुकसान से सेठ का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच चुका था ऐसे में सेठ ने राजू की जमकर पिटाई कर दी और उसे दुकान से निकाल दिया।

रोता रोता बालक निकल गया दुकान से। परंतु अब एक विकराल समस्या उसके सामने आ खड़ी हुई थी कि वह अब काम कहां करेगा? रहेगा कहां? और सोएगा कहां? गांव जाने के भी पैसे ना थे उसके पास। उस रात जाकर राजू फुटपाथ पर सोया, सुबह हुई तो उसने देखा उसको कोई उठा रहा था। वह एक चाय वाला था क्योंकि राजू उसके ठेले लगाने की जगह सोया हुआ था।



ठेलेवाला था तो सज्जन इंसान इस कदर एक बालक को फुटपाथ पर सोया देख उसने राजू से पूछ लिया कहां से आया है? साथ कोई नहीं है क्या? अकेला क्यों है? तू यहाँ कैसे आया? कहाँ जाना है तुझे? अचानक इतने सारे प्रश्नों से घबराया राजू रुआंसा होकर अपनी सारी कहानी ठेले वाले को बता दिया। वह चाय वाला राजू की मदद तो कैसे और क्या ही करता पर चूँकि चाय वाले को भी काफी दिनों से चाय वाले को भी बर्तन धोने के लिए किसी लड़के की तलाश थी तो उसने राजू को पूछ लिया बर्तन धोएगा यहां? दो वक्त की रोटी मिलेगी और ₹10 रोज के दूंगा, पर हां एक बात रहने के लिए मेरे पास कोई जगह नहीं है यहां फुटपाथ पर बहुत लोग सोते हैं तू भी सो जाना। राजू के पास और कोई चारा भी तो नहीं था तो उसने झट से हां कर दी। यह कोई जटिल काम भी नहीं था और चाय वाले को राजू के स्कूल जाने से कोई परेशानी भी ना थी और होती भी क्यों उसे इतने सस्ते में नौकर भी मिल गया था। अब राजू स्कूल से आकर ठेले पर काम करता और रात में सड़क किनारे जलती हुई लाइट में पढ़ाई करता और वही सो जाता धीरे-धीरे वक्त गुजरता गया राजू दसवीं की परीक्षा दे चुका था वह ठेले पर भी चाय बनाने में मदद कर देता था राजू को अपने मेहनत के परिणाम का बेसब्री से इंतजार था। परीक्षा परिणाम के इंतजार में राजू की बेसब्री किसी से छिपी नहीं थी, आज परिणाम जो आने वाला था राजू की मेहनत का।

सुबह 8:00 बजे समाचार पत्र वाला अखबार देकर गया अखबार के मुख्य पृष्ठ पर राजू की तस्वीर छपी थी उसने दसवीं की बोर्ड परीक्षा में पूरे राज्य में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त किए थे। रोजाना चाय पीने वाले तो सब उसे जानते ही थे अखबार में उसका नाम देख सभी ने उसे बधाइयां दी। जिस स्कूल में वह पढ़ता था उस विद्यालय के हेड मास्टर जी खुद उसके पास उसे बधाई देने आए और मिठाई खिलाकर और माला पहनाकर उसका अभिनंदन किया। आज बहुत दिनों बाद फिर से राजू की जिंदगी में एक बड़ी ही खुशी वाला दिन आया था। दिनभर समाचार पत्र वाले भी उसके इंटरव्यू के लिए आते रहे और उसकी जीवन-चर्या को भी अखबार वालों ने बखूबी अपने समाचार पत्रों में छापा। चूँकि अब उसके लिए उपलब्धियों के द्वार खुल चुके थे अनेक प्राइवेट स्कूल वाले उसे अपने स्कूल में निशुल्क पढ़ाई के लिए आमंत्रित कर रहे थे। राजू के हेड मास्टर जी ने उसे सरकारी छात्रवृत्ति दिला कर आगामी पढ़ाई हेतु उचित मार्गदर्शन किया जिससे 12वीं विज्ञान वर्ग में भी उसने वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया।

आगे की शिक्षा हेतु हेड मास्टर जी ने उसे स्कॉलरशिप पर दिल्ली भेज दिया था। राजू की जिंदगी तो निकल पड़ी थी 12वीं पास करने के बाद उसने अच्छे कॉलेज में पढ़ाई की और वहां भी अपने महाविद्यालय का नाम रोशन किया।



ऐसे ही कुछ साल और बीत गए।

फिर अचानक एक दिन चाय वाले के आगे अचानक लाल बत्ती की गाड़ी रोकੀ और सूट बूट पहने एक व्यक्ति चाय वाले के चरणों में आकर स्पर्श करता है ठेलेवाला सकपका जाता है, एक अनजान की तरह उस व्यक्ति को देखता रह जाता है तभी वह व्यक्ति बोलता है मैं-राजू। उस दिन आपने मुझे काम ना दिया होता तो आज मैं इस मुकाम पर ना पहुंच पाता आज मैं एक प्रशासनिक अधिकारी हूँ मेरे इस मुकाम को हासिल करने में आपकी भी अहम भागीदारी है जिसका मैं पूरी जिंदगी कर्जदार रहूंगा। इतने सुनते ही चाय वाले की आंखों से आंसू छलक उठते हैं और दोनों आपस में गले मिलकर रोने लगते हैं।

शिक्षा : परिस्थिति कितनी भी विपरीत हो मन में अगर लग्न हो और कुछ कर दिखाने का जज्बा तो कोई भी कठिनाई आपको आपके रास्ते से भटका नहीं सकती।



प्रतिक्षित तिवाड़ी

प्रबंधक (आगार)

खाद्य संग्रहण आगार, किशनगढ़

जब देखता हूं देश को

जब देखता हूं देश को,
लोगों के बदलते भेष को,
इस बढ़ते धार्मिक द्वेष को,
रोज होते जातीय क्लेश को।
तो सोचता हूं क्या ये है धरती राम की,
जहां बात नहीं होती काम की,
खास हो तो सब आगे पीछे,
कोई सुध नहीं ले आम की।



राम वह है जो शबरी के खाए बेर,
जो करे पाप को ढेर,
यहां दूसरे के धर्म को दिखा के नीचा
बन रहे है मुख भी शेर।
तुम बनाओ एक और शिवालय,
तोड़ दो ये सब विद्यालय,
पर सब से पहले पिघला दो अहंकार
जो बन बैठा है हिमालय।

इस देश को जो बुद्ध और गांधी का है,
जो आज नफरत की आंधी का है,
फिर से बनाना है विश्व गुरु,
तो आज से ही होना होगा शुरू,
झूठ और हिंसा से नहीं होगा ये सच सपना,
सत्य और अहिंसा ही हो रास्ता अपना।





मनु शर्मा

सहायक श्रेणी-द्वितीय (आगार)

मण्डल कार्यालय, अजमेर

तपस्वी तूणीर

अर्जुन तू नहीं प्रथम दृष्ट्या लेकिन तूणीर की गहराई को नापना तेरा भी मौन अधिकार है,
निषंग में रखे संख्याबल को ना समझना तेरे मन का अंध विकार है,
धधकते वेग से गमन कर रहे बाण की दिशा को चिन्हित करना
क्या तुझे अब भी स्वीकार है?

यलगार यदि तुझे स्वीकार है हां अभी भी स्वीकार है तो याद रख
प्रतीकात्मक अब कुछ शेष नहीं तेरा
स्वरूप निरंकुश निरंकार है।

नियति के हाथ खोल सीमाओं का प्रतिकार कर,
बेड़ियां भी टूटेंगी ध्वनि सम प्रचंड कर्म की झंकार कर,
गांडीव मात्र तू ना धारण कर, त्रिगुण तज त्रिकाल हस्त प्रबल पिनाक का आह्वान कर,
दैदीप्यमान व्योम भी तूर्यनाद कर यामिनी पर सजे,
रौद्र वरुण पथ पर रुद्र का शक्तिमय शंख बजे,
हे तपस्वी ऐसी निश्चित ऊर्जा सहज शिरोधार्य हो,
तू साधक अनंत अविरल लक्ष्य का संधान कर,
इस रणभूमि के रंगमंच पर साक्षात् ब्रह्मनाद कर, तांडव का अटल टंकार कर,
हे कर्मयोगी धर्म तेरा यही, सहस्र बार वसुधा अंक में गिर पुनः उठ
एक और तत्पर प्रहार कर, आसक्त से
विरक्त तेजोमय रुद्रांश को स्वीकार कर, स्वीकार कर ॥



कंचन जांगिड़

सहायक श्रेणी-द्वितीय (लेखा)

मण्डल कार्यालय, अजमेर

माँ

एक माँ ही है जो ,
बिन बोले समझती सब ।
एक माँ का दिल ,
एक निरंतर मार्गदर्शक ।
जैसे तेज तपती धूप में,
छांव की तरह।
छोटे कदमों से लेकर ,
बड़े होने का सफ़र ।
वह दिन रात,
सपनों को साकार करने में लगती ।



मुश्किलों में हमेशा संभाला ,
आगे बढ़ने का हौसला बाँधा।
कुझ कर दिखाने का ,
मन में जज्बा जगाया ।
किसी को रोकने नहीं देती ,
आगे बढ़ने के लिए ।
हमेशा सब से कहती ,
तुम मेरी प्रतिलिपि बनती ।



मनु शर्मा
सहायक श्रेणी-द्वितीय (आगार)
मण्डल कार्यालय, अजमेर

खाद्य सुरक्षा: एक भौतिक सत्य या अलौकिक परमार्थ

अन्नं ब्रह्मा रसं विष्णु भोक्ता देवो जनार्दनम्। एवं ज्ञात्वा तु यो भुङ्क्ते अन्नदोषो न लिप्यते॥

(अन्न ब्रह्म है, उसका सार विष्णु है, और जो उसका उपभोग करता है वह जनार्दन है। यदि तुम इसे जान लो, तो अन्न के दोष तुम्हें नहीं पकड़ेंगे।)

-पद्म पुराण

भारतवर्ष की इस महान भूमि जिसने ना जाने कितने ही महान अध्यायों को जन्म दिया और अपनी कोख में सींच के हर अध्याय के सारांश को उस ज्ञातव्य भौतिक वृक्ष में परिवर्तित कर दिया जिसके फलों को हम अपने इंद्रिय ज्ञान से जान सकते हैं परंतु इस वृक्ष की जड़ें अध्यात्म तथा वैज्ञानिक तौर पर अलौकिक एवं दैवीय तथ्यों से निर्मित है। इसी ज्ञान रूपी वृक्ष का मुख्य तना टिका है इस तथ्य पर कि पुरातन काल से ही हर सभ्यता में खाद्य शृंखला से प्रेरित हुआ है हर वो उद्गम जो उस सभ्यता को उत्थान या अपने पतन के शीर्ष तक ले गया है। मेसोपोटामिया, मिस्त्र, ग्रीक, यूनानी, हडप्पन और भी कई अनगिनत सभ्यता व संस्कृतियों ने बार्टर व्यवस्था से लेकर मुद्राओं के प्रचलन तक इस सार्वभौमिक सत्य को शिरोधार्य किया कि भोज्य पदार्थ सिर्फ क्षुधा शांत करने तक का अभिप्राय नहीं रखती अपितु जिह्वा का स्वाद बड़े बड़े पोथेधारीयों, विषय विद्वानों, नाविकों और उसके उपरांत व्यवसायी व सेनाओं तक को पवित्र धरा तक चुंबक के भांति खींच लाया। उद्योग तो मात्र एक निमित्त मालूम हुए, सत्य यही था कि खाद्य शृंखला का ऐपेक्स भक्षी निरंतर भोग्य वश भोज्य पर चक्षु जड़ कर बैठता है।



खाद्य पदार्थों की इसी शक्ति का विश्लेषण करते हुए समाज में खाद्य सुरक्षा अवधारणा ने जन्म लिया, जहां पशु पक्षी अपनी आवश्यकता के हिसाब से कठोर मौसम के आगमन के पूर्व खान-पान को अपने कोटरों में जमा करके रखते हैं वहीं मानव जाति ने तकनीकी विकास कर उसी खाद्य को पोषित व भंडारित करने के ऐसे नए तरीके खोज निकाले जिससे खाद्य भंडारण व रसद व्यवस्था एक विश्वव्यापी उद्योग बन गया। कृषि भूमि के प्रबंधन से लेकर ग्लोबल स्तर पर खाद्य तत्वों के व्यापारिक मानदंडों को तय करने तक के लिए विश्वव्यापी संस्थाएँ अति क्रियाशील हैं।

लेकिन असली प्रश्न उठता है अब, आखिर क्यों हम इस निष्कर्ष को विचार में लाएँ की खाद्य सुरक्षा एक अलौकिक परमार्थ है? ऐसे कौनसे घटक हैं जिनके प्रभाव में आकर ये भोज्य सामग्री एक वृहद भौतिक लोभ की शाख बन गई है?

यहाँ खाद्य सुरक्षा के अलौकिक परमार्थ से अभिप्राय है खाद्य सुरक्षा के प्रकृति से जुड़े किरदार को पहचानना व स्वीकारना, भौतिकतावाद से दूर ये समझना कि खाद्य सुरक्षा मात्र भूख मिटाने की गारंटी या सिर्फ व्यवसाय का हिस्सा नहीं है अपितु प्रकृति से जुड़ते हुए अपने पोषक तत्वों को संरक्षित करने की अति महत्वपूर्ण विधि है जो मानव जाति के विकास का अहम पहलू है।

यद्यपि प्राचीन समय से ही मौसम की मार, महामारी तथा युद्ध होने जैसी परिस्थितियों में मानव सभ्यताएँ खाद्य सुरक्षा एवं भंडारण का महत्व समझती आयीं हैं परंतु सन 1712 में जब थॉमस न्यू कॉमेन ने दुनिया के प्रथम इंजन का आविष्कार किया तथा वर्ष 1764 में इसी इंजन से प्रेरित हो इंग्लैंड के प्रसिद्ध धनी आविष्कारक जेम्स वाट ने भाप चलित इंजन का आविष्कार किया तो उद्योग जगत में जैसे एक नई क्रांति आ गई। उस समय सूती वस्त्र उद्योग से लेकर मसालों, चाय, कहवा, इत्रों इत्यादि खेती व बागवानी आधारित उद्योगों ने काफी जोर पकड़ रखा था। तदुपरांत विश्व युद्ध की आहटें और वक्रत वक्रत पर महामारियों ने दस्तक देना शुरू कर दिया था। सारांश में कुछ यूँ कहें, संसाधन थे, कारण था, बस फिर क्या था, बड़े बड़े लूम, कच्चा माल आधारित उद्योगों ने जड़ें जमा ली और शुरू हो गया भूमि के अत्यधिक दोहन का खेल। इस पैसे कमाने की होड़ और उच्च वर्ग के दिखावे की क्षुधा से पनपे उद्योग जैसे वस्त्र व कृषिभूमि अतिदोहन आधारित उद्योगों ने धरती की कोख को सुखाना चालू कर दिया।

तदन्तर ये दोहन चलता रहा जब तक की युद्ध ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी चपेट में लेकर लोगों को भूखे मरने को बेबस न कर दिया। फ्रांस में एक ब्रेड को लेकर तख्ते पलट हो गए, हिंदुस्तान में बड़े कृषक समुदायों ने औपनिवेशिक विचारधारा की जड़ें हिला दी, देश आजाद हुए, तत्पश्चात रात में दिन कौंध गए ये जानकर कि यदि अभी भी कृषि क्रांति को गंभीरता से नहीं लिया गया तो भविष्य में इसके दुष्परिणाम भोगने होंगे। लेकिन किसे मालूम था कि यहीं से सफर शुरू हुआ होगा खाद्य सुरक्षा के व्यवसायीकरण का। देशों में खाद्य सुरक्षा की नींव तो पड़ी, लोगों की जरूरतें भी पूरी हुई किन्तु खाद्य निर्गमन व फूड सरप्लस नेशन बनने की एक नई होड़ छिड़ गई।

अब ध्यातव्य हो कि खाद्यान्न को अच्छी मात्रा में उगाना व व्यापारिक तौर पे निर्यात करना कोई गलत होड़ नहीं है परंतु उस होड़ के लिए भूमि का अतिदोहन करना, कृषि व बागवानी में अधिक उपज प्राप्त करने के लिए घातक रसायनों का इस्तेमाल करना, बाहर अच्छी किस्म की उपज निर्यात करने के लिए देश के भीतर अच्छे खाद्यान्न की आपूर्ति ना कर पाना, व्यापारिक हितों के पक्ष में आयातित निम्नतर क्वालिटी के खाद्य पदार्थों की आपूर्ति व प्रचार प्रसार किया जाना, ये सभी अत्यंत ही भौतिकतावाद से परिपूर्ण खाद्य संरचना का एक हिस्सा है जो कि आज की जीवनशैली में व्याप्त कर दिया गया है।

जो खाद्य पदार्थ हमारे भोज्य थे, देवी देवताओं व पूज्य को भोग लगाए जाते थे आज उनका स्थान ले लिया है त्याज्य रसायनों ने। इस विषय में आज भी हमारे भारतवर्ष से दुनिया को सीख लेने में शर्म नहीं होनी चाहिए। जहां एक तरफ हम दूध इत्यादि में अग्रणी निर्यातक देश बने हुए हैं वहीं दूसरी ओर कई अग्रणी संस्थाओं जैसे कि भारतीय खाद्य निगम, नाफेड, राजफेड, नाबार्ड, एफएसएसएआई आदि के माध्यम से हम देश की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित कर आम जन तक उसका लाभ पहुंचा रहे हैं, खाद्य उपज, सुरक्षा, भंडारण से लेकर नियमन तक सभी घटकों की देखरेख कर सम्पूर्ण नियमन व लॉजिस्टिक्स की परिधि को माप रहे हैं, हालांकि चुनौतियाँ यहाँ भी कम नहीं हैं, जबकि हम कृषि प्रधान देश होते हुए उपज की देख रेख में आगे आ रहे हैं लेकिन खेती व भंडारण में घातक रसायनों का इस्तेमाल रोकना व ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देना, विदेशों से आयातित संवर्धित, संकर खाद्य किस्मों की जांच व रिसर्च इत्यादि पर अभी भी काफी काम होना बाकी है और यही नहीं पेंक व जंक फूड को जीवनशैली से हटाना हमारा स्वयं का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व है।

हमारी संस्कृति ने सदैव भोजन का ऋतुओं के हिसाब से भोग के रूप में नहीं अपितु योग के रूप में नेतृत्व किया है, हमारे त्योहारों में बीते हुए मौसम की फसल का प्रभु, पशु व जरूरतमंदों को अलग अलग रूपों में पर्व मनाते हुए ससम्मान क्रमशः अर्पण, दान व आहूत किया जाता है तथा आने वाली फसल व फलों से नई ऋतु का स्वागत किया जाता है। होली, लोहरी, बासेडया, छठ पूजा, ओणम, अत्यंत ही उल्लासित पर्व हैं जिनके माध्यम से खाद्य तत्वों की महत्ता को दर्शाया जाता है। हमारे घरों के भीतर जमा क्षुधा रूपी भावनाओं जिनका पाश्चात्य संस्कृति द्वारा व्यवसायीकरण कर तिरस्कार कर दिया गया है, उसे परिवर्तनशील प्रकृति के आज्ञा चक्र अनुसार प्रवाहमान बनाया जाता है, और ये सीख आगे आने वाली पीढ़ी के सामने एक दुराहा सदैव ही रखेगी कि क्या वाकई खाद्य सुरक्षा मात्र एक बैकअप विकल्प है या यह एक अलौकिक परमार्थ है जिसे अभी आत्मसात किया जाना बाकी है?

“भोग नहीं योग है वो जहां अन्न फल मूल का सम्मान है,
सुरक्षित खाद्य सुरक्षित भविष्य का यही प्रथम सोपान है।”



निर्मल गुप्ता

सहायक श्रेणी-द्वितीय (आगार)

मंडल कार्यालय, अजमेर



हर वक्त दूसरों को देख जीने वाले

हर वक्त दूसरों को देख जीने वाले
कर नहीं पाते कुछ हासिल जीवन में कहीं
मंजिलों को पाना नहीं है इतना आसान ही
जिद तो करो पाने का अगर हो अरमान कहीं....



कहता नहीं वक्त कुछ पाने को मंजिल
कुछ तो कभी धूल भी चटा जाता है
अगर रह जाए कमी विश्वास में कहीं भी
फिर भी करने वाले तो कर गुजरते ही हैं...

वैसे तो जिंदगी आसान नहीं होती पर
कर गुजरने का जोश जब दिल में हो
तो कोई राह मुश्किल भी नहीं होती
और वैसे भी जिंदगी इतनी भी आसान नहीं होती....





जितेन्द्र कुमार

सहायक श्रेणी-तृतीय (आगार)

मंडल कार्यालय, अजमेर



ये जमीं

ये जमीं, ये आसमान
ये खुशी - ये मुस्कान
रोटी कपड़ा और मकान
सबके हिस्से में नहीं आता।

ये एतबार ये प्यार
ये आंसू ये इंतजार
सुकुन भरा एक ईतवार
सबके हिस्से में नहीं आता।

ये रास्ता, ये सफर,
ये मंजिल ये रात,
ये शाम, ये शहर
हाथ पकडकर चले,
वो हमसफर सबके हिस्से में नहीं आता।

बेशक, ये किसी कहानी
किसी किस्से में नहीं आता
के जिंदगी मिलती है,
मगर जीना सबके हिस्से में नहीं आता।





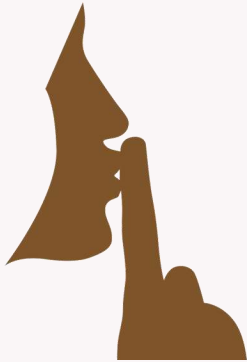
जितेंद्र गर्ग

**सहायक श्रेणी-द्वितीय (आगार)
खाद्य संग्रहण आगार, अजमेर**



किसी को जानने के लिए..

किसी को जानने के लिए,
हर बार उसकी बातें सुनना जरूरी नहीं है,
बस यह देख लीजिए कि वह कब, कहाँ
और किसके सामने चुप रहता है ।



कभी डर के मारे, कभी सम्मान में,
कभी शर्मिंदगी में,
तो कभी किसी कड़वे सच के सामने
बेमतलब बेपरवाही में ।





दिलीप स्वामी

सहायक श्रेणी-द्वितीय (तकनीकी)

खाद्य संग्रहण आगार, पाली

दर्शन

दर्शन चित में लगा आश,
बैठा हूं दर्शन पाने को ।
तीन लोक के स्वामी को,
अभिनंदन से मनाने को ॥

प्रभु! जो चाहूं अद्भुत ज्ञान,
मेरी बुद्धि को समझाने को,
कलयुग जो अब भारी है,
मानवता को झुलसाने को ॥

दूर हुआ हूं ज्ञान ध्यान से,
भंडार लोभ जुटाने में,
आगोश में हूं आज खड़ा,
बदलने दुनिया शमशानों में ॥

दर्शन चित में लगा आश...

धर्मों पर मेरे प्रश्न खड़ा,
अभिमानों के वाहनों में,
मैं नश्वर होकर प्रश्न करूं,
अमूर्त हस्ती दिखाने में ॥

मेरा रोम रोम है आज भ्रमित,
टूटा सा है अब काज भ्रमित,
हर नर नारी की लाज भ्रमित,
मन वाणी का हर साज भ्रमित ॥

कलि-ज्ञान से भ्रमित चरित्र मेरा,
शुद्धि से भ्रमित मन रिक्त मेरा,
अनन्त काज की करूं अरज,
हर अरज में भ्रम अतिरिक्त मेरा ॥

दर्शन चित में लगा आश....

मैं लंपट सा तू क्षितिज सा,
मैं अल्पज्ञान तू दीक्षित सा,
जली पड़ी मानवता आज,
तू ही उपाय हिमशीत सा ॥

समर्थ नहीं कोई यहां,
भक्ति मार्ग दिखाने में,
भव सागर को पार करे,
नियम ऐसा सिखलाने में ॥



दर्शन चित में लगा आश...

हर युग को जिसने जीता है,
मन द्वंद युद्ध कचोटा है,
अनन्त ब्रह्मांडो को जिसने
बालमुख में समेटा है ॥

महाभारत में रहकर, बिन
अस्त्र शस्त्र जो जीता है,
कहते है श्री कृष्ण जिसे,
हर कालचक्र सजाता है ॥

दर्शन चित में लगा आश...

पिता मेरा वो मित्र मेरा,
मां और निज संतान बसा,
दूँदू उसको हर प्रस्तर में,
हर कण में जो हुआ धसा ॥

वाणी के प्रखरता से ही
अर्जुन तीरों की धार करी,
संदेशों के छंदों से जिसने
कौरव सेना मार धरी ॥

मैं वीर भक्त उसको ही ध्याऊं,
हर रूप में जिसको मैं पाऊं,
जो अंत सदा, आरंभ भी वो,
मन अश्व, उस तक पहुंचाऊं ॥

दर्शन चित में लगा आश...

सुनकर के मुझपापी को,
दिव्यज्ञान रथ खोल दिया,
अद्वितीय शक्ति के धारक ने,
आज मुझको आशीर्वाद दिया ॥

अनन्तमुखी वो रूप दिखा,
आध्यात्म चक्षु खोल दिया ,
मेरे जीवनभर के आत्मज्ञान को,
पंखों सा हल्का तौल दिया ॥

दर्शन चित में लगा आश,
बैठा हूं दर्शन पाने को ।
तीन लोक के स्वामी को,
अभिनंदन से मनाने को ॥





प्रतीक खंडेलवाल
सहायक श्रेणी-द्वितीय (लेखा)
मंडल कार्यालय अजमेर

साइकल पर सवार लड़की और एक पूरी बोतल एसिड...

एक लड़की थी नैना जैसे उसका नाम तो वैसे ही उसकी शक्ल सूरत में। उम्र होगी 19 वर्ष दिखने में बहुत ही भोली रंग एकदम दूध जैसा बोलती तो मानो ऐसा लगता जैसे मुंह से मोती झड़ रहे हो। सबसे मिल-जुलकर चलने वाली मधुर स्वभाव की धनी सभी का दिल जीतने वाली। अनजान लोगों से तो बात भी नहीं करती।

पर हां जलने वाले उसकी खूबसूरती से जरूर जलते थे अभी स्कूल में उसने जिला टॉप किया था तो घरवालों ने सोचा पढ़ाई में अच्छी है तो शहर के बड़े कॉलेज में दाखिला दिला दिया सोचा पढ़ लिख कर बड़ा नाम करेगी और उसके खुद के करियर के लिए भी अच्छा ही था कॉलेज शहर में था और शहर गांव से लगभग 100 किलोमीटर दूर रोज आना जाना संभव था नहीं। तो कॉलेज के हॉस्टल में दाखिला दिला दिया अब बस उसके दिनचर्या में हॉस्टल से कॉलेज जाना और कॉलेज से हॉस्टल आना। कॉलेज की दहलीज पर कदम ही रखा था पर कॉलेज में भी एक दम शांत होने के कारण और पढ़ाई लिखाई मन लगाकर ध्यान देने के कारण शिक्षकों की चहेती छात्रा बन चुकी थी। हा यह बात अलग है कि यह बात कुछ साथी छात्राओं को जरूर बुरी लगती थी।



रोज कॉलेज जाने के लिए हॉस्टल से नैना साइकिल से जाती रास्ते में कुछ युवक (युवक भी क्या कहे उन्हें समाज कंटक ही कहें तो गलत ना होगा) उसे रोज घूरते रहते परंतु वह इन सब पर ध्यान नहीं देती। एक दिन कॉलेज में जल्दी जाकर नैना को कुछ काम निपटाने थे तो वह अकेले ही कॉलेज के लिए निकल पड़ी थी और उसी दिन उन्हीं में से किसी एक मनचले ने उसकी साइकिल के आगे आकर रास्ता रोक लिया और आकर उसका हाथ पकड़ लिया हाथ में गुलाब लिए हुए वह मनचला गलत निगाहों से उसे देख रहा था और इसका आभास उसे हो चुका था वह एक अभूतपूर्व विपत्ति में फंस चुकी थी।

यू तो इस रास्ते पर ज्यादा लोगों का आना जाना था नहीं परंतु उसके कॉलेज का जाने का एकमात्र यही रास्ता होने के कारण नैना का इसी रास्ते से जाना मजबूरी थी उस मनचले के नैना के पास जाते ही उसके साथी हंसने लगे और मजाक भी बनाने लगे तभी उस मनचले ने नैना का हाथ पकड़कर उसको साथ चलने को कहा। यह तो नैना भी जानती ही थी कि उनकी मनोवृत्ति ठीक नहीं, तभी पीछे से हॉस्टल की अन्य छात्राएं भी आ ही गई और जैसे ही उनमें से एक लड़की जो काफी गर्म मिजाज की थी उसने जोर से उस लड़के को डांटा। उसकी डांट मात्र से घबराकर सारे मनचले भाग खड़े हुए उस दिन तो नैना उन छात्राओं की वजह से बच गई परंतु उसके मन में एक अनजान डर उत्पन्न हो चुका था अब वह अन्य छात्राओं के साथ ही कॉलेज जाती उस घटना के बाद से लगभग 10-15 दिन तक तो उनमें से एक भी मनचला दिखाई नहीं दिया परंतु एक दिन अचानक जब नैना और अन्य छात्रा साइकिल से कॉलेज जा रही थी उन्हीं में से दो मनचले रास्ते के बीच में आकर खड़े हो गए और नैना के आते ही उनमें से एक जिसने नैना का पहले हाथ पकड़ा था अपने बैग में से एसिड की बोतल निकालते हुए नैना की तरफ बढ़ा दिया, हाथ में एसिड की बोतल देख अन्य छात्राएं घबरा गईं, यूं तो यह घटना भी ऐसे ही दिन हुई जब वह गर्म मिजाज वाली लड़की भी उनके साथ नहीं आई थी शायद आज कुछ अनहोनी होनी तय थी।



तभी अचानक से उस मनचले लड़के ने एसिड की बोतल को नैना के मुंह पर उड़ेल दिया और भाग खड़ा हुआ, अचानक हुए इस प्रहार से अन्य लड़कियां कुछ कर पाती उससे पहले ही नैना के मुंह पर एसिड की तेज जलन होने लगी और वह करहा उठी और जोर जोर से रोने लगी अन्य लड़कियां उसे संभालने ही लगी थी कि तब तक उसके चेहरे पर फफोले पड़ना शुरू हो गए इस करुण वेदना को देख सभी छात्राएं सहम उठी और तुरंत ही उन सभी ने नैना को लेकर अस्पताल का रुख किया। अस्पताल में तुरंत नैना को भर्ती कराया गया डॉक्टरों ने उसका इलाज शुरू किया परंतु उसका चेहरा जल चुका था आज एक हस्ती खेलती हंसमुख नैना का एक नयन (नेत्र) उसका साथ छोड़ चुका था।

यू तो उन मनचलों को पुलिस द्वारा गिरफ्तार भी कर लिया गया और कानून ने उन्हें सजा भी सुनाई 10 साल की। पर आज सवाल यह उठता क्या वे 10 साल की, मात्र 10 साल की सजा नैना की जीवन को वापस वैसे ही पटरी पर ला सकेंगे कभी नहीं। क्योंकि ऐसा हो भी नहीं सकता ना तो वह आंख में विश्वास से भरपूर नैना कभी अपना आत्मविश्वास प्राप्त कर सकेगी ना ही उसका जला हुआ चेहरा पूरी तरह ठीक हो सकता है और ना ही नैना का नयन वापस आ सकता है।

राकेश कुमार

मण्डल प्रबन्धक

मण्डल कार्यालय, अजमेर



वृद्धावस्था अभिशाप नहीं



होती नहीं वृद्धावस्था अभिशाप,
ये तो जीवन का एक अंतिम पर,
एक महत्वपूर्ण चरण होता है।
हम प्राकृतिक रूप से बाध्य होते हैं,
बुढ़ापे को जीने के लिए,
ना हो उपेक्षित हमारे बुजुर्ग वृद्धावस्था में,
आओ सब मिलकर,
इनको उचित सम्मान दिलायें।

बुढ़ापा होता है जीवन का कठोरतम,
वर्जनीय और अवांछित कई समस्या से घिरा,
पर होते हैं बुजुर्ग हमारे अपार ज्ञान,
अनुशासन और अनुभव के शक्ति पुंज,
आवो पीढ़ी के बीच अंतर को भूल,
बैठ कर इनके सानिध्य में जीवन सफल
बनाएं।



ना हो भ्रम हमें अपनी युवावस्था पर,
बुढ़ापा तो एक सर्वभौमिक सत्य है,
होती है बुढ़ापे में कई,
मानसिक और शारीरिक समस्याएं,
ना हो बाध्य कोई,
बुजुर्ग निर्वासित जीने को अब,
अपना तन मन धन इनकी सेवा में लगाएं।

जिन नाजुक अंगुलियों को थामा था कभी,
अपने प्यार और स्नेह से नवाजा था,
उम्र के इस अंतिम और निर्णायक चरण में,
ना हो ये असहाय अब और
हम भी उसी प्रेम और श्रद्धा के साथ,
इनकी ओर सहयोग के हाथ बढ़ाएं।

बुजुर्ग होते हैं परिवार का अहम हिस्सा,
जिन्होंने मेहनत और त्याग के बल पर,
अपने परिवार आर्थिक संपन्नता प्रदान की,
अपने निजी स्वार्थ के कारण इनको,
ओल्ड एज होम ना भेजें,
सब मिलके ग्रांड डम्पिंग (त्याग देना)
से इनको अब बचाएं।



उम्र की इस अवस्था में इनको चाहिए,
स्नेह प्रेम और सुरक्षा की भावना,
ना होते है कोई स्वार्थ ना आर्थिक मांगे,
ना ही कोई ऊंचे सपने ।
देते हर पल अपना सब कुछ बच्चों को,
सब पर प्रेम प्यार लुटाते हैं,
अब समझें हम अपनी ज़िम्मेदारी,
इन्हे ससम्मान जीने का अधिकार दिलाएं ।

अभिभावक को हासिल है भगवान का दर्जा,
भारतीय संस्कृति वेदों और पुराणों में,
हो बेहतर खान-पान, चिकित्सा और देखभाल,
बुढ़ापे में ना हो तिरस्कार और उपेक्षा,
सब मिलकर बुजुर्गों के साथ हो रही घरेलू हिंसा,
अपमान और क्रूरता से बचाएं ।



न भूलें इनका योगदान हम हमारे जीवन में,
रखें याद जीवन के हर उपलब्धियों में ।
करे सम्मान हमेशा अपनी बुजुर्ग पीढ़ी का,
ताकि न बढ़े पीढ़ियों में ये अंतर,
बने रिश्ते आपसी मधुर और
समरसता लिए हुये,
प्रेम प्यार की गंगा बहायें ।

बुढ़ापा है ईश्वरीय रूप,
खुद समझे दूसरों को समझायें,
उनको उचित सम्मान दिलायें।





मनीषा कुमारी
सहायक श्रेणी-द्वितीय (राजभाषा)
मंडल कार्यालय अजमेर

योग : स्वस्थ जीवन की कुंजी

प्राचीन भारतीय संस्कृति की अनुपम देन, **योग** आज केवल भारत में ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व में स्वास्थ्य और मानसिक शांति का पर्याय बन चुका है। कार्यालयीन जीवन की व्यस्तता, मानसिक तनाव, कंप्यूटर पर लगातार काम और शारीरिक निष्क्रियता से उत्पन्न अनेक समस्याओं का समाधान योग में निहित है।

योग का अर्थ है – जोड़ना, अर्थात् शरीर, मन और आत्मा का समन्वय। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाता है, बल्कि मानसिक संतुलन, भावनात्मक स्थिरता और आत्मिक शांति भी प्रदान करता है।

योगा (योग) क्या है?

योगा एक प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति है, जो शरीर, मन और आत्मा को संतुलित और एकीकृत करने की प्रक्रिया है। "योग" शब्द संस्कृत के "युज्" धातु से आया है, जिसका अर्थ है जोड़ना या एकीकृत करना। योग केवल आसनों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सम्पूर्ण जीवन शैली है जो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है।

योग के मुख्य अंग (अष्टांग योग - पतंजलि योग सूत्र के अनुसार):

1. **यम** – नैतिक अनुशासन (जैसे अहिंसा, सत्य, अस्तेय)
2. **नियम** – व्यक्तिगत अनुशासन (शौच, संतोष, तप)
3. **आसन** – शरीर को स्थिर और स्वस्थ रखने वाले व्यायाम
4. **प्राणायाम** – श्वास नियंत्रण (जीवन ऊर्जा को नियंत्रित करना)
5. **प्रत्याहार** – इंद्रियों को बाह्य वस्तुओं से हटाना
6. **धारणा** – मन को एक बिंदु पर स्थिर करना
7. **ध्यान** – ध्यानावस्था में मन का स्थिर रहना
8. **समाधि** – आत्मा और ब्रह्म का एकाकार होना



योग के लाभ:

- **शारीरिक लाभ:** लचीलापन, ताकत, संतुलन और सहनशक्ति बढ़ती है।
- **मानसिक लाभ:** तनाव, चिंता और अवसाद में कमी आती है।
- **आत्मिक लाभ:** आंतरिक शांति और आत्म-जागरूकता में वृद्धि होती है।
- **रोगों से सुरक्षा:** उच्च रक्तचाप, मधुमेह, अस्थमा, पीठ दर्द आदि में लाभदायक।

प्रसिद्ध योग प्रकार:

- **हठ योग** – शरीर को शुद्ध करने और शक्ति प्राप्त करने पर बल
- **राज योग** – ध्यान और आत्मनियंत्रण पर आधारित
- **भक्ति योग** – ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण
- **ज्ञान योग** – आत्मा और ब्रह्म की जानकारी द्वारा मुक्ति
- **कर्म योग** – निःस्वार्थ कर्म द्वारा योग





कार्यालय में योग का महत्व

आधुनिक कार्यस्थलों में कर्मचारियों को लंबे समय तक एक ही स्थान पर बैठकर कार्य करना पड़ता है, जिससे कमरदर्द, आंखों में थकान, उच्च रक्तचाप, तनाव और मोटापा जैसी समस्याएं आम हो गई हैं। इन समस्याओं का सरल और प्रभावी समाधान योग है।

नियमित योगाभ्यास के लाभ:

कार्यक्षमता और एकाग्रता में वृद्धि
तनाव और मानसिक थकान में कमी
शरीर की लचीलापन और ऊर्जा में सुधार
कार्यालय में सकारात्मक वातावरण का निर्माण



कुछ सरल योग अभ्यास, जो कार्यालय में भी किए जा सकते हैं:

नेत्र व्यायाम: कंप्यूटर पर लंबे समय तक काम करते समय आंखों को आराम देने के लिए।

भ्रामरी प्राणायाम: मानसिक शांति हेतु, दिन में कुछ मिनट।

कटिचक्रासन व ताड़ासन: कुर्सी पर बैठे-बैठे भी किए जा सकते हैं, जो रीढ़ और शरीर में रक्त संचार सुधारते हैं।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम: फेफड़ों की क्षमता बढ़ाने और तनाव कम करने हेतु प्रभावी।

योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है। यदि हम प्रतिदिन कुछ मिनट योग को समर्पित करें, तो न केवल हम स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं, बल्कि अपने कार्यस्थल को भी अधिक उत्पादक, सुखद और प्रेरणादायक बना सकते हैं।





मण्डल कार्यालय, अजमेर

राजभाषा हिन्दी नकद प्रोत्साहन पुरस्कार - विजेताओं का विवरण

वित्तीय वर्ष 2023-24

क्र. सं.	आवेदक का नाम	पदनाम	कार्यस्थल	सत्यापित हिन्दी शब्दों की संख्या	पुरस्कार पात्रता	धन राशि (रु. में)
1.	श्रीमती हीना गर्ग	स.श्रे.-तृ. (तक.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	122066	प्रथम	6000/-
2.	श्री शशिकांत मीणा	स.श्रे.-द्वि. (आ.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	101584	प्रथम	6000/-
3.	श्रीमती याशिता चौधरी	स.श्रे.-द्वि. (तक.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	101200	द्वितीय	5500/-
4.	श्रीमती चम्पा मुंडीतिया	स.श्रे.-प्र. (तक.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	91225	द्वितीय	5500/-
5.	श्रीमती नेहा जैन	स.श्रे.-द्वि. (तक.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	61492	द्वितीय	5500/-
6.	श्रीमती रमा कुमारी शर्मा	स.श्रे.-तृ. (तक.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	61440	तृतीय	5000/-
7.	श्रीमती इतिशा विजयवर्गीय	स.श्रे.-तृ. (तक.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	55587	तृतीय	5000/-
8.	श्री विकास पुरी	स.श्रे.-द्वि. (सा.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	52849	तृतीय	5000/-
9.	श्री कुलदीप सिंह ढाका	स.श्रे.-द्वि. (आ.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	46910	तृतीय	5000/-
10.	श्रीमती करिश्मा	स.श्रे.-तृ. (आ.)	मण्डल कार्यालय, अजमेर	37735	तृतीय	5000/-



मण्डल कार्यालय, अजमेर

हिन्दी पखवाड़ा (पुरस्कार) - विजेताओं का विवरण

माह सितंबर 2024

क्र. सं.	प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
01.	निबन्ध लेखन	श्री सिद्धार्थ शंकर शर्मा, स.श्रे.-द्वि. (आ.)	श्री जितेंद्र कुमार, स.श्रे.-तृ. (आ.)	श्री के. के. जिंदल, प्रबन्धक (आ.) एवं श्रीमती हीना गर्ग, स.श्रे.-तृ. (तक)
02.	सामान्य ज्ञान	श्री प्रतीक खंडेलवाल, स.श्रे.-तृ. (लेखा)	श्री विकास पुरी, स.श्रे.-द्वि. (सा.)	श्रीमती निर्मल गुप्ता, स.श्रे. -द्वि. (आ.) एवं श्री नलिन जैन, प्रबन्धक (आ.)
03.	हिन्दी अनुवाद	श्रीमती स्मिता कुशवाह, स.श्रे.-तृ. (आ.)	श्री शशिकांत मीणा, स.श्रे.-द्वि. (आ.)	श्री मुकेश कुमार, स.श्रे.-तृ. (सा.)
04.	हिन्दी-ज्ञान प्रतियोगिता	सुश्री नीता जुनवाल, स.श्रे.-तृ. (तक)	श्री राजकुमार बैरवा, स.श्रे.-प्र. (लेखा)	श्रीमती सरिता जाखड़, स.श्रे.-द्वि. (आ.) एवं श्री राकेश यादव, स.श्रे.-द्वि. (तक)
05.	चित्रकला	श्रीमती दीपा पाटनी, स.श्रे.-द्वि. (तक)	श्रीमती नेहा जैन, स.श्रे.-द्वि. (तक)	श्रीमती कंचन जांगिड़, स.श्रे.-तृ. (लेखा) एवं श्रीमती इतिशा विजयवर्गीय, स.श्रे.-तृ. (तक)



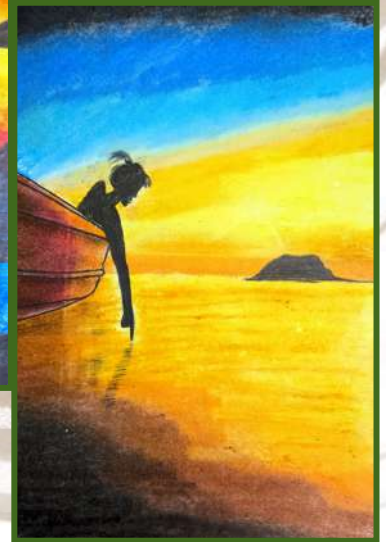
★ कला प्रदर्शनी ★



श्रीमति नेहा जैन, सहायक श्रेणी-द्वितीय (तक.) की पुत्री अविाका जैन (उम्र 9 वर्ष) कक्षा-04 की छात्रा द्वारा बनाए गए चित्र



श्री रवीन्द्र सिंह शेखावत, सहायक श्रेणी-प्रथम (आ), आगार मारवाड़ जंक्शन द्वारा निर्मित चित्र ।



श्री राजेश कुमार कोरी, सहायक श्रेणी-प्रथम (आ), मं. का., अजमेर के पुत्र कर्तव्य (उम्र 10 वर्ष) द्वारा निर्मित चित्र ।



★ कला प्रदर्शनी ★



सुश्री मनीषा कुमारी, सहायक श्रेणी-द्वितीय (रा.भा.) की भतीजी मन्नत (उम्र 10 वर्ष)
द्वारा बनाए गए चित्र



सुश्री मनीषा कुमारी, सहायक श्रेणी-द्वितीय (रा.भा.) के भतीजे खुशाल सिंह (उम्र 11 वर्ष)
द्वारा बनाए गए चित्र



★ जगमगाते तारे ★



खाद्य संग्रहण आगार, अजमेर में कार्यरत श्री पंकज कुमार दायमा, स.श्रे.द्वि (तक.) के पुत्र उज्जवल कुमार दायमा कक्षा-8 ,केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2 अजमेर ने केंद्रीय विद्यालय संगठन द्वारा संभागीय स्तर पर आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता 2024-25 में बॉक्सिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक और नगर निगम अजमेर द्वारा आयोजित खेल महाकुम्भ-2024 में बॉक्सिंग प्रतियोगिता तृतीय स्थान प्राप्त किया गया ।



श्री अनिल शर्मा, सहायक श्रेणी -प्रथम (लेखा) के पुत्र वायु शर्मा (06 साल) की तस्वीरें ।

1. एकल नृत्य प्रतियोगिता- बांगर पब्लिक स्कूल, रास
2. कविता वाचन एवं फैसी ड्रेस प्रतियोगिता -बांगर पब्लिक स्कूल, रास

★ जगमगाते तारे ★



खाद्य संग्रहण आगार, भीलवाडा में कार्यरत श्री बंसी लाल माली, सु.श्रे. प्रथम (तक.) की पुत्री पुत्री रव्या सैनी, कक्षा-5 (उम्र-11 वर्ष) द्वारा शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में जिला स्तर पर बास्केट बाल प्रतियोगिता (14 वर्ष वर्ग) व एथलेटिक्स प्रतियोगिता (14 वर्ष-वर्ग 100 मी. व 400 मी.) में भाग लिया गया था, जिसमें बास्केटबाल में 14 वर्ष वर्ग में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया व स्थानीय विधायक (पूर्व) श्रीमान विठ्ठल शंकर अवस्थी व जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक) भीलवाडा श्रीमान अशोक पारीक द्वारा सम्मानित किया गया ।

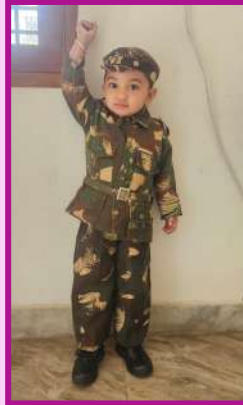


डेकेथलॉन जयपुर सिटी द्वारा आयोजित स्केट फेस्ट इवेंट में इनलाइन स्केट्स वर्ग में कु. आन्या जैन पुत्री दीपा पाटनी, मण्डल कार्यालय, अजमेर, ने रजत पदक प्राप्त किया ।





★ जगमगाते तारे ★



श्रीमती जांकि, स. कंचन (लेखा) की पुत्री साक्षी जांकि (उम्र 04 वर्ष) द्वारा विद्यालय के वार्षिकोत्सव में भाग लिया गया।



श्री सिद्धार्थ शंकर शर्मा, स. श्रे.-द्वि. (आ.) के पुत्र समृद्ध शर्मा (उम्र 08 वर्ष) द्वारा विद्यालय के वार्षिकोत्सव की नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया व दौड़ प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।



श्री सिद्धार्थ शंकर शर्मा, स. श्रे.-द्वि. (आ.) की पुत्री जयश्री शर्मा (उम्र 05 वर्ष) द्वारा विद्यालय के वार्षिक खेल दिवस में भाग लिया गया व दौड़ प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया।





संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति का निरीक्षण (निरीक्षण दिनांक : 16.01.2024, मण्डल कार्यालय, अजमेर)





श्री आशुतोष अग्रिहोत्री, आई.ए.एस. (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक) महोदय द्वारा दिनांक : 09.05.2025 को मण्डल कार्यालय, अजमेर एवं आगार अजमेर का दौरा किया गया ।





05 जून 2025 विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधरोपण (आगार भीलवाड़ा)



पौधरोपण (मण्डल कार्यालय, अजमेर एवं आगार मारवाड़ जंक्शन)



स्वच्छता पखवाड़ा (आगार मारवाड़ जंक्शन)





वार्षिक अंतर संभागीय खेल प्रतियोगिता 2025





वार्षिक अंतर संभागीय खेल प्रतियोगिता 2025 : विजेता

श्रीमती ममता शर्मा (स. श्रे.-द्वि. (तक.), आगार किशनगढ़) ने शतरंज प्रतियोगिता में संयुक्त विजेता बन पहला स्थान प्राप्त किया।



श्रीमती चंदा रणवाँ (स. श्रे.-द्वि. (सा.), म. का., अजमेर) ने 400 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त





अंबेडकर जयंती समारोह





स्वच्छता पखवाड़ा (मण्डल कार्यालय, अजमेर)



**सतर्कता
जागरूकता
सप्ताह**
(मण्डल कार्यालय,
अजमेर)





उप महाप्रबंधक (राजभाषा) महोदय की अध्यक्षता में
दिनांक : 23.11.2024 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन





मण्डल प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक





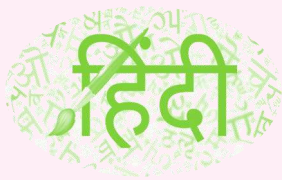
हिन्दी कार्यशाला





हिन्दी कार्यशाला





हिन्दी पखवाड़ा-शुभारंभ, सितंबर-2024 (मण्डल कार्यालय, अजमेर)





हिन्दी पखवाड़ा, सितंबर- 2024

खाद्य संग्रहण आगार, किशनगढ़



खाद्य संग्रहण आगार, भीलवाड़ा



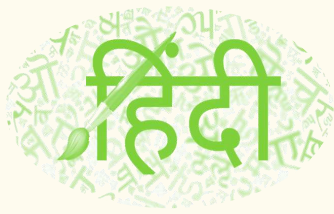
खाद्य संग्रहण आगार, मारवाड़ जंक्शन





हिन्दी पखवाड़ा, सितंबर-2024 (हिन्दी प्रतियोगिताएं)





हिन्दी पखवाड़ा-समापन, सितंबर-2024 (मण्डल कार्यालय, अजमेर)





अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर पौधरोपण (मण्डल कार्यालय, अजमेर एवं आगार अजमेर)



आगार भीलवाड़ा



आगार मारवाड़ जंक्शन





आगार किशनगढ़



आगार पाली



आगार नागौर





अजमेर दर्शन



जगतपिता श्री ब्रह्मा मंदिर



पुष्कर घाट एवं पुष्कर सनसेट पॉइंट



ख्वाज़ा गरीब नवाज़ दरगाह शरीफ़



सावित्री देवी मंदिर पुष्कर



नारेली ज्ञानोदय दिगंबर जैन मंदिर

अम्बे माता मंदिर

सोनी जी की नसियां जैन मंदिर

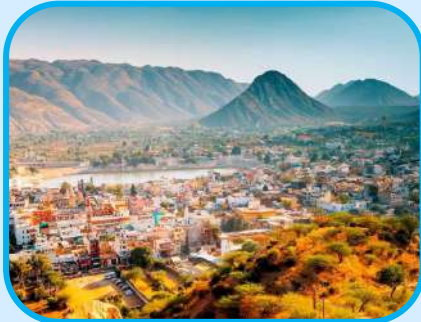


तारागढ़ किला

वरुण सागर झील (फॉय सागर)



आना सागर झील



अजमेर हवाई दृश्य



क्लॉक टावर



बजरंगगढ़ मंदिर



आर्चिस कैसल



अढ़ाई दिन का झोपड़ा



मेयो कॉलेज



सम्राट पृथ्वीराज चौहान स्मारक



महाराणा प्रताप स्मारक



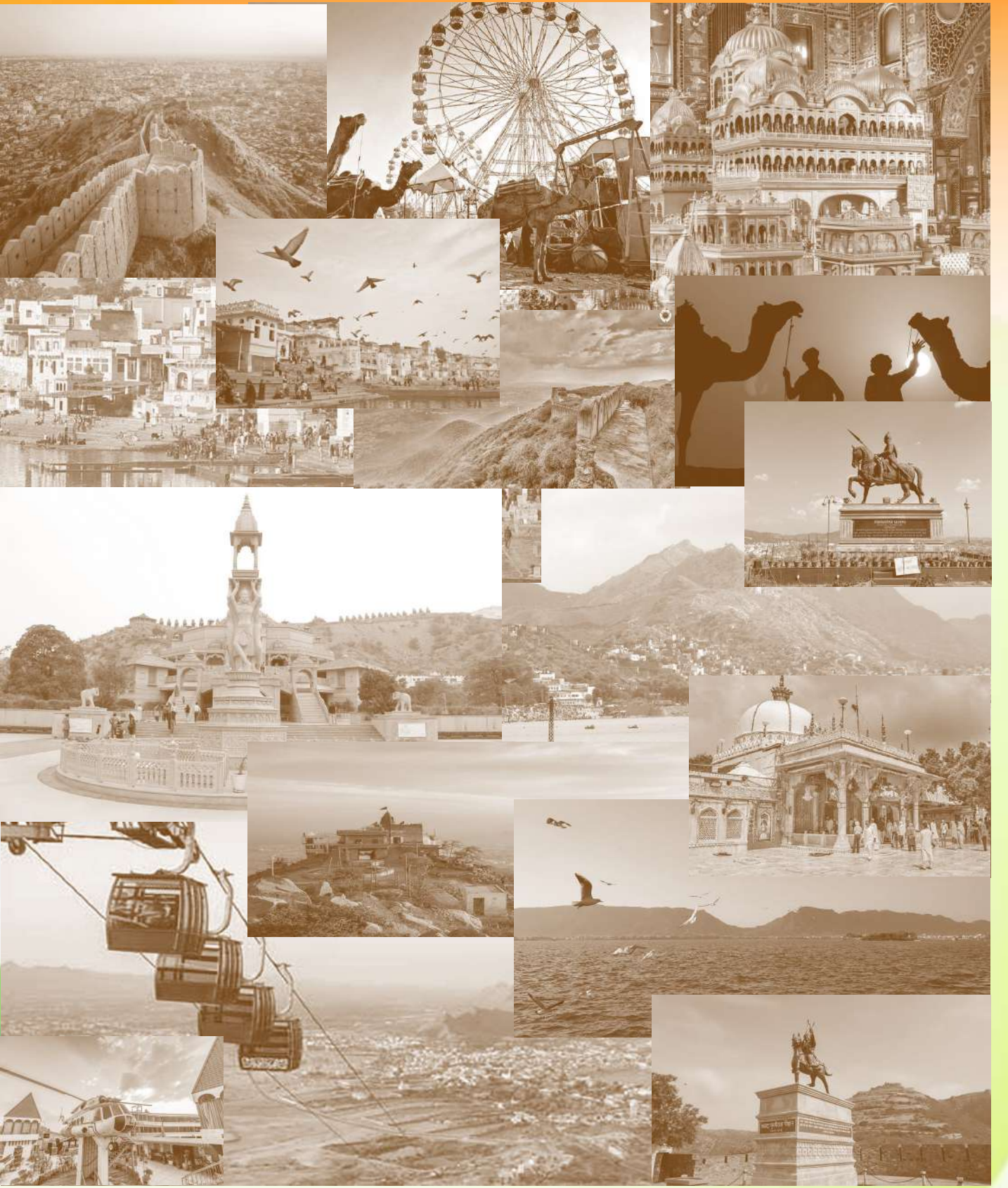
झरनेश्वर महादेव मंदिर



पशु मेला, पुष्कर

मण्डल कार्यालय, अजमेर





अजयमेरु दर्शन

ई-पत्रिका (अंक-01) वर्ष-2025

पत्र व्यवहार का पता :

संपादक, राजभाषा अनुभाग, भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, दौराई, ब्यावर रोड़, अजमेर-305003 (राजस्थान)
ईमेल : hindiajmerrij.fci@gov.in